अध्याय-4

पृथ्वी के प्रमुख स्थल रूप

विभिन्न स्थलाकृतियाँ– पर्वत, पठार एवं मैदान :

पटना जंक्शन पर गरीब रथ दिल्ली की ओर जाने के लिए तैयार खड़ी थी। बिहार के विभिन्न जिलों से आए लड़कियाँ और लड़के शिक्षिकाओं के नेतृत्व में छब्बीस जनवरी की परेड में भाग लेने दिल्ली जा रहे थे। सभी अपनी–अपनी सीट पर बैठ गए थे। गाड़ी चल पड़ी। सभी बच्चे बहुत उत्साहित थे। थोड़ी देर में गाड़ी के सोन नदी के पुल पार करने की गड़गड़ाहट सुनाई पड़ी। तभी राहुल बोल उठा – अभी थोड़ी ही देर में यह गाड़ी हमारे गाँव के पास से गुजरने वाली है। खिड़कियों से देखना, दूर–दूर तक मैदान ही मैदान नजर आयेंगे और दूर–दूर तक पहाड़ का कोई नामो–निशान नहीं दिखाई देगा। बीच में दखल देते हुए मनोज बोल उठा–हमारे बाल्मीकिनगर में तो घने जंगल और पहाड़ दिखाई पड़ते हैं। राहुल बोला–सच, मैंने तो कभी नहीं देखा। तभी गीता बोल उठी–ऐसा भी क्या, कभी राजगीर और जमुई की ओर आओ तब तुम्हें पहाड़ियां दिखाई पड़ेंगी।

मनोज बोला– मेरे यहाँ के पहाड़ बहुत ऊँचे और बड़े हैं। गीता बोली–नहीं, मेरे यहाँ के पहाड़ ज्यादा ऊँचे हैं? शिक्षिका इन सभी बच्चों की बात सुनकर मुस्कुरा रही थीं। उन्होंने सभी बच्चों को पास बुलाया और कहा–सुनिये, ये पहाड़, पठार और मैदान प्रकृति की देन हैं।

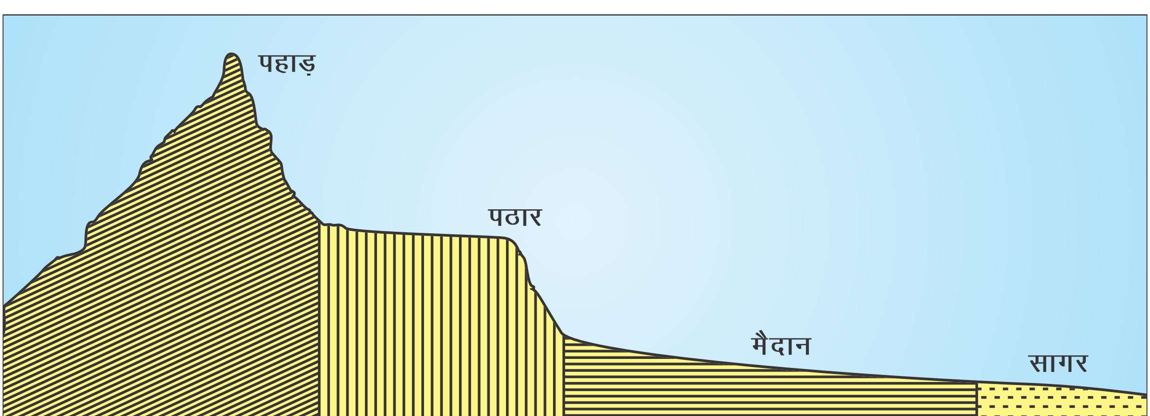

चित्र 4.1 पृथ्वी के विभिन्न स्थलरूप

बताइए

- राहुल, गीता और मनोज कैसे क्षेत्रों के रहने वाले थे?
- सभी अपने–अपने इलाके के बारे में क्या बता रहे थे?
- बाल्मीकिनगर कहाँ है?

शिक्षिका ने राहुल से पूछा – राहुल आप बताइये, आपके गाँव में भूमि कैसी है लोग क्या–क्या करते हैं, कैसे रहते हैं, कहाँ रहते हैं, क्या खाते हैं?

चित्र 4.2 मैदानी भाग में स्थित धान का खेत

राहुल बोला–हमारे गाँव में दूर–दूर तक समतल भूमि है न कहीं अधिक ऊँची न कहीं अधिक नीची। इसमें लोग धान, गेहूँ, चना, ईख इत्यादि फसलें उपजाते हैं। नदी एवं तालाब भी है। कृषि कार्य के लिए लोग वर्षा पर आधारित हैं। बरसात के दिनों में पानी खेतों में रुक जाता है। सिंचाई के लिए वर्षा के जल का भंडारण आहर में भी किया जाता है। कुछ जगहों में

नहरों की व्यवस्था है। नदियों में बाँध बनाकर पानी खेतों तक पहुँचाया जाता है। हर तरफ मिट्टी एक जैसी नहीं है। कहीं चिकनी है तो कहीं दोमट है। खेतों की जुताई के लिए हल बैल, ट्रैक्टर एवं पावर टीलर का उपयोग किया जाता है। चिकनी मिट्टी को केवाल मिट्टी भी कहते हैं जिसमें धान की फसल खूब होती है। दलदली मिट्टी में दलहन की फसल खूब होती है।

कई गाँव पक्की सड़क से जुड़े हैं तो कई गाँव कच्ची सड़कों से। यहाँ पर बैलगाड़ी, ट्रैक्टर, ठेला, ऑटो आदि से सामग्रियाँ, पशुओं का चारा इत्यादि ढोये जाते हैं। कुछ लोग बस और रेलगाड़ी से शहर में नौकरी करने जाते हैं तथा शाम में घर वापस आ जाते हैं। कई गाँवों में नदी नालों के किनारे सरकार ने पेड़ भी लगवाए हैं। कुछ लोगों ने अपनी जमीन में लकड़ी और फल के लिए बगीचे भी लगा रखे हैं। शहरी क्षेत्र के नजदीक वाले खेतों में सब्जियों की खेती की जाती है। साथ ही घरों के नजदीक वाली जमीन पर कुछ किसान सब्जियां भी उगाते हैं जिनकी बाजार में खूब माँग है। रहने के लिए पक्के एवं कच्चे मकान हैं। खाने में भात–रोटी, दाल, सब्जी, दूध, दही, चूड़ा, सत्तू एवं चना प्रमुख हैं।

बहुत अच्छा राहुल! आपने बहुत अच्छी बात बताई – शिक्षिका ने बात आगे बढ़ाते हुए **कहा– प्रायः नीची और समतल भूमि का प्रदेश मैदान कहलाता है।** मैदानों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे समुद्र से ऊँचे या नीचे हो सकते हैं परंतु अपने समीपवर्ती पठार तथा पर्वत से ऊँचे नहीं हो सकते हैं। यह प्रायः एक ही प्रकार की मिट्टी से बने होते हैं जिसमें थोड़ा बहुत स्थानीय अंतर हो सकता है।

मैदान मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं –

1. **अपरदन मूलक मैदान** – वे मैदान जिनकी रचना में अपरदन की क्रिया का प्रमुख हाथ रहता है अपरदन मूलक मैदान कहलाते हैं। जैसे : फिनलैंड का मैदान, उत्तर यूरोप तथा कनाडा के पूर्वी क्षेत्र के मैदान।
2. **निक्षेपण मूलक मैदान** – निक्षेपण की क्रिया के द्वारा नदियों, हिमानी, वायु तथा

सागरीय तरंगों से जो मैदान बनते हैं उन्हें निक्षेपण के मैदान कहते हैं। जैसे : केरल के तट के मैदान, हंगरी का मैदान आदि।

3. **रचनात्मक मैदान** – इस प्रकार के मैदानों का निर्माण पृथ्वी की आंतरिक हलचलों द्वारा होता है। जैसे : उत्तरी अमेरिका का मध्यवर्ती मैदान।

मैदानी क्षेत्रों में जीवन–यापन के लिए भोजन, जल, आवास एवं परिवहन की सुविधाएँ आसानी से उपलब्ध होती हैं। ऐसे क्षेत्रों में सड़क मार्ग, रेलमार्ग एवं अन्य सुविधाएँ आसानी से प्रदान की जा सकती हैं।

शिक्षिका ने कहा– बिहार का अधिकतर भाग गंगा नदी के दोनों तरफ मैदानी भाग के रूप में फैला हुआ है। इसमें कृषि कार्य होता है। ऐसे मैदान पश्चिम में पंजाब से लेकर पूरब में असम तक मिलते हैं। ये इलाके सतलज, गंगा और ब्रह्मपुत्र का मैदान कहलाते हैं। यह पूरा, मैदानी क्षेत्र अन्न उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं। इसे भारत के उत्तरी विशाल मैदान के नाम से भी जाना जाता है –

पता कीजिए –

- **भारत के नक्शे से पता कीजिए कि कौन–कौन से राज्य मैदान के क्षेत्र में है?**
- **भारत के मानचित्र में सतलज, गंगा और ब्रह्मपुत्र के प्रवाह क्षेत्रों को अलग–अलग रंगों से चिह्नित करें।**
- **जहां आप रहते हैं वहां लोगों के खाने एवं पहनने में कौन–कौन सी चीजें प्रमुख हैं?**

पठार :

शिक्षिका की बातें सुनकर बच्चे आपस में बातें करने लगे। तभी शिक्षिका ने कहा– मैदानी भाग के अलावा हमारे देश में पठारी क्षेत्र भी हैं। क्या आपको मालूम है ?

बच्चों ने नहीं में सिर हिलाया।

शिक्षिका ने बताया – पठार आस–पास की भूमि से ऊँचा होता है तथा उसके ऊपर का भाग सपाट होता है। पठार की ऊँचाई कुछ सौ मीटर से लेकर कई हजार मीटर तक हो सकती है। कुछ पठार तो हजारों किलोमीटर क्षेत्र में फैले होते हैं। हमारे देश में दक्कन का पठार तथा छोटा–नागपुर का पठार इसके अच्छे उदाहरण हैं। तिब्बत का पठार संसार का सबसे ऊँचा पठार है। पामीर के पठार को 'संसार की छत' कहा जाता है ।

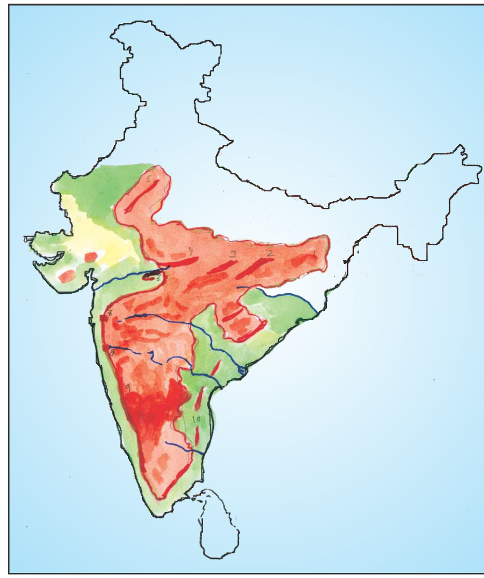

चित्र 4.3 प्रायद्वीपीय भारत का मानचित्र

राजू पूछ बैठा–इन पठारों में क्या मिलता है ? इन पठारों में खनिज के भंडार मिलते हैं – शिक्षिका ने बताया।

चर्चा कीजिये एवं बताइये –

छोटा नागपुर के पठार में कौन–कौन से खनिज मिलते हैं? ये खनिज हमारे जीवन को कैसे प्रभावित करते हैं?

पर्वत :

मनोज बोला– दीदी जी, मेरे पश्चिम चंपारण जिला में भी तो पठार है।

शिक्षिका ने कहा – नहीं–नहीं, जिन्हें तुम पठार कह रहे हो वे पठार नहीं बल्कि पर्वत हैं, क्योंकि पर्वतों के ऊपरी हिस्से सपाट नहीं होते और वे आस–पास के क्षेत्रों से बहुत संकीर्ण होते हैं। ये लम्बी श्रृंखला के रूप में भी फैले होते हैं। ऐसी श्रृंखला को पर्वत श्रेणी कहते हैं। बहुत ऊंचे होने के कारण कुछ पर्वतों पर हमेशा बर्फ जमी रहती है और इनसे कई नदियाँ निकलती हैं। भारत में हिमालय पर्वत पर बर्फ जमी रहती है और कई नदियाँ भी निकलती हैं। अरावली पर्वत पर बर्फ तो नहीं जमती परन्तु वहाँ भी वर्षा जल के कारण नदियाँ निकलती हैं।

चित्र 4.4 हिमालय पर्वत स्थित एवरेस्ट चोटी

हिमालय पर्वत की अधिक ऊँचाई के कारण उसके शीर्ष भाग में बर्फ जमते हैं, लेकिन कम ऊँचाई के कारण अरावली पर बर्फ नहीं जमती है।

लेकिन हाल के दिनों में वहाँ भी तो बर्फ बारी हुई है दीदी – मनोज ने कहा।

हाँ हुई है और ऐसा होना पर्यावरण में बदलाव का संकेत है – दीदी बोली।

चर्चा कीजिए एवं बताइये –

- **पानी किन–किन कामों के लिए बहुत जरूरी है?**
- **जहाँ आप रहते हैं वहाँ पानी के क्या–क्या साधन हैं?**
- **हिमालय पर बर्फ जमती है लेकिन अरावली पर क्यों नहीं ?**
- **अरावली पर्वत कहाँ है ?**

देखिये – पर्वतों का आकार एक जैसा नहीं होता। बिहार में बड़े पर्वत तो नहीं हैं किन्तु छोटी–छोटी पहाड़ियाँ जरूर हैं। जिन्हें आप राजगीर, गिरियक, बराबर, हवेलीखड़गपुर और मंदार हिल में जाकर देख सकते हैं – दीदी कहती गईं। सभी बच्चे ध्यान से सुन रहे थे।

उन्होंने आगे कहा–पर्वत से निकलने वाली नदियों के जल का उपयोग सिंचाई तथा पनबिजली उत्पादन में किये जाते हैं। पर्वतों पर कई प्रकार की वनस्पतियाँ तथा जीव–जंतु पाये जाते हैं। इनसे हमें लकड़ियाँ, चारा, औषधियाँ आदि प्राप्त होते हैं। पर्वत पर्यावरण संरक्षण एवं वर्षा कराने में भी सहायक होते हैं। परंतु पर्वतों पर यातायात कठिन होता है। यहाँ खेती करना भी कठिन होता है। खेती करने के लिए किसानों को सीढ़ीदार खेत बनाने पड़ते हैं।

चित्र 4.5 सीढ़ीदार खेत

घने जंगल, अत्यधिक ऊँचाई एवं परिवहन का अभाव होने से यहाँ का जीवन मैदानों की अपेक्षा कठिन होता है।

पर्वतारोहण (पर्वत के ऊपर चढ़ना) का खेल अधिक ऊँचाई वाले पर्वतों पर होता है। सैलानियों के लिए ये पर्यटक स्थल आकर्षण के केन्द्र होते हैं। पहाड़ जहाँ बर्फ जमी होती है वहाँ पर लोग स्कीईंग करते हैं। शिमला और कश्मीर में पर्यटक इसका खूब आनंद लेते हैं।

हाँ दीदी, मैंने फिल्मों और टी.वी. में भी ऐसा देखा है – राहुल बोल उठा।

बिल्कुल सही कह रहे हो – दीदी ने सिर हिलाकर स्वीकृति दी।

चित्र 4.6 बर्फ पर स्कीईंग करता व्यक्ति

पता कीजिए– भारत में कौन–कौन से स्थान पर्वतीय पर्यटक स्थल के रूप में प्रसिद्ध हैं?

दीदी ने बताया कि पर्वत तीन प्रकार के होते हैं–

वलित पर्वत–इनकी सतह ऊबड़–खाबड़ एवं शिखर शंक्वाकार होती है। जैसे–भारत का हिमालय पर्वत एवं दक्षिण अमेरिका का एन्डीज पर्वत।

भ्रंशोत्थ पर्वत–पृथ्वी के आंतरिक हलचलों के कारण पृथ्वी पर दरारें पड़ जाती हैं। दो दरारों के बीच का भाग ऊपर उठ जाता है। इस ऊँचे उठे भाग को भ्रंशोत्थ पर्वत कहा जाता है। भारत का सतपुड़ा पर्वत इसका उदाहरण है।

ज्वालामुखी पर्वत–ज्वालामुखी से निकले लावा एवं अन्य पदार्थों के ठंडा होकर जम जाने से जिन पर्वतों का निर्माण होता है उसे ज्वालामुखी पर्वत कहते हैं। इटली का विसुवियस पर्वत इसका उदाहरण है। भारत के अण्डमान निकोबार के बैरन आइलैन्ड में सक्रिय ज्वालामुखी पर्वत पाए जाते हैं। कम ऊँचाई के पर्वतों को पहाड़ी कहा जाता है।

वलित पर्वतों के अत्यन्त प्राचीन होने से अपरदन के कारण ऊँचाई कम हो जाती है, ऐसी स्थिति में ये अवशिष्ट पर्वत कहे जाते हैं। जैसे : अरावली।

पता कीजिए –

पर्वतों की विभिन्न चोटियों के नाम पता कीजिए। ये चोटियाँ किस पर्वत पर एवं किस राज्य में हैं?

मैदानों, पठारों और पहाड़ों के बदलते चेहरे :

शिक्षिका ने कहा कि अब तो मैदान, पठार और पहाड़ पहले जैसे नहीं रह गए हैं तो सभी बच्चे चौंक गए। सभी ने पूछा–क्यों?

शिक्षिका बोली–बढ़ती जनसंख्या ही इसका मुख्य कारण है। बढ़ती जनसंख्या के लिए भोजन, वस्त्र, आवास की जरूरतें बढ़ी हैं। पहाड़ों पर लोग बसने लगे हैं। पर्यटक पहुंचने लगे हैं। वनों को काटा जा रहा है। इससे वहां प्रदूषण भी बढ़ा है। सड़क निर्माण के लिए इन्हीं पठारों और पहाड़ों को काटा जा रहा है जिससे ये विलुप्त होते जा रहे हैं।

मैदानों में परिवहन, जल, समतल भूमि की उपलब्धता के कारण कल–कारखाने लगे हैं

जिससे आबादी काफी घनी हो गई है। कल–कारखानों के लिए खनिजों की उपलब्धता पठारों से है। इसलिए पठारों का दोहन हो रहा है। इन सबकी प्राकृतिक सुंदरता घटी है। पठारों तक प्रदूषण बढ़ा है और वन क्षेत्र घटे हैं। मैदानी भागों में सहज उपलब्ध भूजल का जबरदस्त उपभोग कृषि कार्यों में, कल–कारखानों में एवं आवासीय कार्यों में हुआ है इसलिए इनका भी दोहन हो रहा है। यही वजह है कि इन क्षेत्रों में भी भूजल का स्तर गिरता जा रहा है। जिससे जल संकट पैदा हो रहा है आने वाले दिनों में भी हमें गिरते भूजल स्तर की समस्या का जबरदस्त सामना करना पड़ेगा।

पहाड़ों पर निर्मित घरों के लिए उपयोग में आने वाली निर्माण सामग्रियों की सूची बनाएँ।

अभ्यास

1. सही विकल्प को चुनें।

i. बिहार में सोन नदी किस तरह के क्षेत्र से होकर गुजरती है?

(क) पहाड़ी क्षेत्र (ख) पठारी क्षेत्र

(ग) मैदानी क्षेत्र (घ) रेगिस्तानी क्षेत्र

ii. बाल्मीकीनगर बिहार के किस क्षेत्र में अवस्थित है?

(क) पश्चिमी क्षेत्र (ख) पूर्वी क्षेत्र

(ग) दक्षिणी क्षेत्र (घ) उत्तरी क्षेत्र

iii. धान की फसल के लिए उपयुक्त मिट्टी है –

(क) बलुआही मिट्टी (ख) चिकनी मिट्टी

(ग) दोमट मिट्टी (घ) पर्वतीय मिट्टी

iv. पठार के ऊपर की सतह होती है –

(क) नुकीला (ख) सपाट

(ग) संकीर्ण (घ) ढालदार

v. पर्वतों के कितने प्रकार होते हैं ?

(क) चार (ख) पाँच

(ग) तीन (घ) दो

2. खाली जगहों को भरें –

i. बिहार का अधिकतर भाग ....नदी के दोनों ओर मैदानी भाग के रुप में फैला है।

ii. ....को संसार का छत कहा जाता है।

iii. पहाड़ों की लम्बी शृंखला को ....श्रेणी कहते हैं।

iv. शिमला और कश्मीर देश के प्रमुख ....पर्यटन स्थल के उदाहरण हैं।

v. प्राकृतिक वातावरण के बदलते स्वरुप का मुख्य कारण बढ़ती ....है।

3. सही मिलान करें।

(i) भ्रंशोत्थ पर्वत	(क)	दक्कन क्षेत्र
(ii) वलित पर्वत	(ख)	सतपुड़ा पहाड़ी
(iii) प्राचीन पठार	(ग)	हंगरी का मैदान
(iv) निक्षेपात्मक मैदान	(घ)	हिमालय

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें –

(i) मैदानी क्षेत्र की क्या–क्या विशेषताएँ होती हैं?

(ii) सड़क निर्माण का कार्य किस क्षेत्र में आसान होगा और क्यों?

(iii) पर्वत, पठार और मैदान के दोहन से इस पर क्या प्रभाव पड़ा है?

(iv) मैदान में ही अधिक लोग क्यों बसते हैं?

(v) पर्वत कितने प्रकार के होते हैं? सभी के नाम लिखें।